

ॐ

तू माने या ना माने दिलदारा
असा ते तेनु रब मनया
दसो होर केडा रब दा छारा — असा ते तेनु

तुझ बिन जीवा भी क्या जीवा
तेरी चौखट मेंग मदीवा । २
नहीं और कहीं सजदा गवारा — असा ते तेनु

जब इस तन दी खाक उडाई
तब इस इश्क दी मंजिल पाई
मेरी सासो का बोले इक तारा — असा ते तेनु

तू मिल्या ते मिल गई खुदाई वे
हथ जोड के मैं कोल तेरे आई वे
मैं ता मर जांगी, ओ मैं ता मर जांगी
न अख मेरे जो गोड़ी — असा ते तेनु

दिता जदो दा तु मेनु ऐ सहारा
मैं ता भूल गई आ जग सारा
ऐ हो खुशी है मैनु बहुतेरी — असा ते तेनु

दसो होर केडा रब ता छारा असा ते तेनु

ओ किने होर होवे रब दा छारा

ओ कही होर नहीं सजदा गवारा,
नहीं ओर कहीं सजदा गवारा असा ते तेनु

ॐ

तेरे दर आके गुरुजी, हरि ओम गाके गुरुजी,
रब नाल होइया मुलाकाता । —२, तेरे दर

अंदर होवा बाहर होवा, गुरु मेरे नाल वे
सखियों मैं की—२ दसा, ऐना दे कमाल वे,
के हुन ता शाम सद्वेरे, ने दिल विच सतगुरु मेरे,
करदे ने मेरे नाल बाता, तेरे दर

मीरा बागु, धने बागु, नाल मेरे हसदे
गेम—२ विच मेरे सतगुरु वसदे,
के नगणा दी धूल जो पावे, कटी ना शीश उठावे
पा जाए बीमती गौमता, तेरे दर

कीमती है हीग लचा, मखा माघ—२ के,
कुर्बान पा स्वह होटी, सतगुरु आपने
के हुन ते तन मन वारा, के नाले जीवन सवारा
खुशी न गुजार दिन यता, तेरे दर

खिडिया ने स्वर्ण दाता, इस दर आके
मन वी यकून पावे, दर्शन तेरा पाके
के हर पल शुक गनावा, तेरी ही सिफूता पावा,
प्यार दी लोडिया ने बग्याता, तेरे दर

जेडा तेरे दर ते आवे, अनमोल दान ओ पावे
उसदा बज्रुद ना गहां — होण तो बेहोश हो जावे
दिल दी लगी न करदा, बदगी दे मार्ग बलदा,
साहिब दीया करदा गुलामाता, तेरे दर



तमाशा तुझ में होता है तमाशे में क्यों रोता है?

- १ जानना रूप है तेरा जानने से है वो मेरा,
जाने और आने वाले में, क्यों व्यर्थ जन्म खोता है।
- २ हुआ जब जानना अपना, न माला है न है जपना,
मिटा मैं मेरे का सपना, गफिल क्यों नींद सोता है।
- ३ कोई काबे में कहता है, कोई काशी में जाने का,
वो अपने आप को भूला, दीवाना पाप धोता है।
- ४ नहीं परलोक की आशा, नहीं कुछ चाह बनने की,
परमानन्द को पाकर के, पूरण—पूरण में होता है।



तुम्हारी भी जय—जय, हमारी भी जय—जय,
न तुम हारे न हम हारे,
शरण तेरी लेके चला हूँ मैं जग में,
जो हम हारे तो कैसे हारे?

- १ नाम तेरा लेता है हर कोई, पर दिल से न भजता है,
जब दुख आए तो रोता है बचा लो—२
जो तुम उनसे पृछो अभी तक हां थे,
जो अब आए, न पहले आए।
- २ लीला देख के रोया, जग का हर एक प्राणी,
अंत मे तेरी शरण को लेके, अपनी हार ही मानी है,
ओ दुनिया वालों, ऐसा न कोई होगा जग में,
जो गिरे को उठाये, दुखों से बचाये।
- ३ आज तलक कोई न समझा, है जग में कब तक जिंदा,
फिर भी देखो राम का भजनर, ही समझी अपनी निंदा,
ओ जागो दुनिया वालों, अभी तक तुम नहीं जागे,
तुम्हारा ही मालिक, जब राजी है तुम से,
तो तुम पाओ तो सहजे पाओ।



दादा के ज्ञान में वो शक्ति है,
वो ही दर्पण को साफ करती है,
दादा ने बीज जो उगाए हैं,
इक दिन उनसे फल निकलते हैं।

जब से डोरी गुरु से जोड़ी है,
तब से जीवन गुरु से तेरा है,
अब तो दूजा नजर नहीं आता,
सबमें तेरी ही झलक दिखनी है।

देह में सब विकार होते हैं,
गुरु देह से भी मुक्त करते हैं,
एक अहंकार जब निकल जाता,
सब विकार खुद ब खुद निकलते हैं।

रंग लायेगी सच की ये महफिल,
मिल गई, सतगुरु से है मंजिल,
अब तो सच ही हमारा जीवन है,
जिंदगी सच में ही गुजरती है।



दिलकश है तेरा नशा, सूरत ही निराली है,
हो नजरें करम जिस पर, वो जां से वाली है।

क्या पेश करे तुमको,
क्या चीज हमारी है,
ये दिल भी तुम्हारा है,
ये जां भी तुम्हारी है।

तुम पीर हमारे हो,
हग गुरशित तुम्हारे है,
हम लाख बुरे ही सही,
पर कहलाने तुम्हारे है,
इक नजरे करम कर दो,
क्या शान तुम्हारी है। दिलकश

साये में तुम्हारे हैं,
किस्मत ये हमारी है,
हमें दिल में सजाये रखना,
आरजू ये हमारी है। दिलकश



दर्शन पादियां ही चढ़ गई खुमारी,
निराला कोई, पीर आ गया—२

दर्शन पादियां ही भिट गई वीमारी
निराला कोई पीर आ गया—२

जग तो निराला मेरा हाग वाला पीर है,
बदल दीती संईयों जिसने मेरी तकदीर है,
जावां चरणां तो सदा बलिहारी, निराला

सानृ विश्वास ऐना, गन लेना कहना है
असा गुरु चरणां विच वैठे ही रहना है,
भावे रूस जावें दुनियां सारी, निराला

सतगुरु तेरे कोलो ऐहो दिल मंगदा,
पाप ऐने किते दिलों कहदियां नी संगदा,
कीति पापियां ते मेहर वारो वारी, निराला

अज तक दुनियां दे कोलो की मिलिया,
सत्संग विच आके सुख चैन मिलिया,
सारी दुनियां नू वारो वारी वारी, निराला



दिल दे सिंहासन उते कौन आकै बै गया,
मैं मेरी मुक गई, तू ही तू रह गया।

दिखा के नजारे मैनू, इक नजर नाल लुट्या,
झलक दिखा के सोनी, मैनू मार सुट्या,
तेरे ही भरोसे जीना, तेरे जोगा रह गया।
मैं

सतगुरु मेरा प्यारा, चंद सूरज तो न्यारा है,
मिठ्या ने गला ते, गुप्त इशारा है,
प्रेम वाली नजर नाल, नैना विच वस गया।
मैं

तीरे जिगर लगा के, कर गया दिवाना ए,
वाह मेरे सतगुरु, अजब निशाना है,
वैद वन निराकार, आप देखो आ गया।
मैं

प्यार दा की जादू तेरा, साडी दशा निराली है,
रोम—रोम रंग तेरा, अंखा विच लाली है,
तुआंनु पाके सतगुरुजी, मुल जिदंगी दा पा लिया।
मैं



दीवानों का मेला, है सतसंग बेला
ये जन्मत नहीं हैं तो फिर और क्या है
यहां तेरा आना, आके न जाना
यह किसमत नहीं है तो फिर और क्या है

मिली जब ये महफिल कहने लगा दिल
यहां से मुझे उठके जाना नहीं है
जिसे ढूढ़ता था यही है वो मंजिल
कहीं और मेरा ठिकाना नहीं है
ये तुमसे हगारी, ये हगसे तुम्हारी
मोहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है। दीवानों.....

नहीं था नहीं था, तुम्हारे मैं काविल
किया फिर भी मुझको अपनों में शामिल
मिला जबसे मुझको दामन तुम्हारा
न मरने का डर है ना जीना है मुश्किल
कहे दुनिया सारी ये मुझपर तुम्हारी
जो रहमत नहीं है तो फिर और क्या है दीवानों.....

इन आंखों को ऐसा जलवा दिखाया
मुझे तुमने अपना दीवाना बनाया
तुम्हारे सिवा अब नजर कुछ ना आये
यूं रंग गुड़पर अपना चढ़ाया
ये ऐसी खुमारी, मुझपे तुम्हारी
इनायत नहीं है तो फिर और क्या है। दीवानों.....



दाता तेरा नाम लिखिया, ऐ मेरी साहां ते,
नाम लिखिया ऐ, दिल ते, निगाहां ते, दाता तेरा.....

गुरु चरणा विच हर खुशी मेरी,
आसरा तेरा जिदंगी मेरी—२
ऐहो चर्चा ऐ चारां दिशावां ते, दाता तेरा.....

दीद तेरी जे सानूं मिल जावे—२
दिल दी क्यारी बी, आये खिल जावे—२
गौर फरमाई, मेरियां दुआवां ते, दाता तेरा.....

गलतियां करके माफियां मंगियां—२
दितियां दाता ने, नेमतां चंगियां—२
परदे पाये ने मेरियां गुनाहां ते, दाता तेरा.....

सेवा संगता दी हरदम करदां रहां—२
मस्तक चरणा ते हरदम धरदां रहां—२
निगाहां पाई तू मेरियां, चाहवां ते, दाता तेरा.....



निका जया काम श्यामा,
तेरे तो कराना है,
पहले तेरे चरणा विच शीष झुकाना है
बहुत बड़ा काम नहीं श्यामा घबराई ना
लोक—परलोक दा साथी बनाना है।

पहला काम श्यामा मेरे मन विच वस जा,
जिधर वी वेखा मैनू नजर आए हंसदा,
तन मन विच नाले, अखा विच वसाना है। निका

दूजा काम श्यामा परवा नईयो मोक्ष दी,
सानू वी चाइदी तेरे संता नाल दोस्ती,
तू ही दाता भव तो पार लगाना है। निका

तीजा काम श्याम जग—जंजाला तो वचा लो,
संता की टोली विच, नाम मेरा ले लवो,
सूनो हारा वाले, मैनू दिलो न भुलाना ऐ। निका

चौथा काम श्यामा मन—विषया तो निकाल दो,
मन विच नाम वाली ज्योति सच्ची वाल दो,
अज तेरे रंग विच रंग ही जाना है। निका

पंजवा काम श्यामा सब तो छोटा है
अंत वेला आवे होवे कोल तू खडोता ऐ
हथ फड नाल मैनू अपने ले जाना है। निका

सब तो आखिर दासी ऐइयो मंग मंगदी,
सानू वी देवी दाता संगत सतसंग दी,
चक्र चौरासी तू यू ही मिटाना है। निका



न पूछो ये मुझसे मैं क्या देखता हूं
मैं तेरी नजर में खुदा देखता हूं।

तेरी मुस्कारहट मेरी जिंदगी है
यही जिंदगी खुशनुमा देखता हूं।

समझता हूं खुद को गुनहगार लेकिन,
तुम्हीं एक को पारसा देखता हूं।

भले और बुरे की पहचान कैसे,
हर एक को एकसा देखता हूं।

खुशी और गमी सब वगवर है मुझको,
मैं सबमें ही तेरी रजा देखता हूं।

किसी से भी नफरत करूँ किस तरह मैं
मैं गैरों में भी आशियां देखता हूं।

कहूँ क्या कहाँ पर है तेरा ठिकाना
मैं हर शह में तुझको छिपा देखता हूं।

न दो बुत परस्ती का इल्जाम मुझपर,
मैं हर बुत में नूरे खुदा देखता हूं।

बिना जात तेरी सब कुछ है पानी,
तुम्हीं एक को एकसा देखता हूं।



नहियो जिदंगी दा कोई वसा, के नीवा होके चल बंदया
के निवियां नू रब मिलदा,
के नीवां होके चल बंदया।

माया दे गुमान विच रब नू भूलाई ना
कामी कोधी लालची, भक्ति न पावेना
तू छड दे मोह माया, के

नीवा होके गज न सदया कन्हाई नू
शिल्नी दे वेशं ने रिहाया रधुराई नू
हुन तू वी ना देर लगा के

धीयां पुत्र कोई वी नाल नही जान्दे ने
छड के मसाना तक वापस आ जान्दे ने
बंदे कोई वी नाल ना गया के

माया दे गुमान विच बडे—२ दुर गए
भर के तिजोरियां, सब ऐथे ही छड गए
बंदे कुछ वी नाल ना गया, के नीवा.....



नाकर अब तू मेरा मेरा
टृटेगा अभिमान जो तेग

दिल में प्रभु का प्यार नहीं है, जीवन में कुछ सार नहीं है
धर्म कर्म से पार हो तेरा

ये जग इक झूठा सपना, फिर क्यों इसको माना अपना
छोड़ने पर पड़ेगा रोना

ये धन पाप से कमाया जो तूने, ये सगाज बनाया
जो तूने, सब हैं प० की अमानत का देना

इस जग की तू प्रीत छोड दे, सतगुरु आगे
शीष नवा दे, काट ले जन्म मरण का फेरा



नित खैर मंगा सोनिया मैं तेरी,
(दुआ न कोई होर मंगदी) — २
तेरे पैरां च अखीर होवे मेरी, दुआ.....

तेरे प्यार दिता जदो दा सहारा वे
माईया भूल गया, मैनू जग सारा वे—२
खुशी ऐहो मैनू
खुशी ऐहो मैनू सजना बथेरी, दुआ ने कोई.....

तृ मिलया ते मिल गई खुदाई वे
हाथ जोड अखां पावी न जुदाई वे
मर जावांगी मैं
मर जावांगी मैं अख जे तृ फेरी, दुआ ने कोई.....



तेरे प्रेम मे, विश्वास मे, और मन रहे तेरे
प्यार मे, मेरे सतगुर—२—२—२
तेरा साथ है मेरी जिदगी—२
तेरा सजदा मेरी वंदगी—२
रहे मन मे तेरी ही मूर्ति—२
और मन रहे तेरे साथ मे, मेरे.....

हृदय मे हो सदभावना —२
किसी भाव का अहं न हो—२
रहूँ छल कपट से दूर मैं—२
शीतल रहूँ हर हाल मे — मेरे.....

तृ जो मुस्कराया चमन खिला—२
हर गय हसीं जीवन खिला—२
हुआ जब से तेरा ये कर्म—२
जनत है मेरे पास मे — मेरे.....

तेरा नूर साया बहार का—२
तेरा रूप आडना प्यार का —२
हर शय मे तृ है छिपा हुआ—२
तृ ओम है, निं० है, मेरे सतगुर
तेरे प्रेम मे



नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात
 इस नशे दे सामने, होर नशे सब मात, नाम
 सतनाम—२—२ जी वाहे गुरु—२—२ जी जपो.....

हाथ जोड के गुरां तो—२ मंगा मैं खैरात
 दे दुनियां दे गालिका, नाम दान दी दान—२
 रात है उजली नाम जप के—२ उजली है प्रभात
 नाम खुमारी सतनाम.....

सुरत गुरु दे चरणा च, चढ़दी जाए आकाश—२
 शब्द हजारां करन पये, दुख हजारा नाश—२
 कीर्तन सिमरन करदियां, जम तो मिले निजात—२
 नाम खुमारी सतनाम.....

गुरु वाणी विच सैकड़ें, है सुखां दा वास—२
 वचन गुरू दे पढ़देयां, जीवन आवे रास—२
 हल हो जावे मुश्किल, जेकर सतगुरु पावे झात
 नाम खुमारी सतनाम.....

नामदेव ने नाम दा—२ पीता निर्मल नीर—२
 जपेया नाम कबीर ने, होई कबीर—२
 सतगुरु कृपा दे नाल बनदी—२, सबदी विगड़ी बात
 इस नशे दे सामने, होर नशे सब गात, नाम
 सतनाम—२—२ जी वाहे गुरु—२—२ जी जपो.....



पिला दे ओ साहिबा राम नाम की मस्ती
 इस मस्ती दी खातिर साहिबा असां मिटाई हस्ती।

इक बृंद की खातिर साहिबा, सीस मांगे ता देवां,
 जे सिर दित्या बृंद मिले, तावी जान्या सस्ती।

रंग मेरे दी रीस ना होवे, कोई वी रंग पिला दे,
 पीवन वाले गुल नहीं पुछ्दे, मेंहगी हो या सस्ती।

ऐसी मस्ती पिला दे साहिबा, होश बेहोशा तू कर दे,
 जे तेरे कोलो प्याला न ही, बुका नाल पिला दे।

नाम प्याला पीवण वाले, नहीं मौत तो डरदे,
 रब दी रजा विच राजी रहदें, शिकवा कटी न करदे।

सारे ढारे छोड के साहिबा, मल्या तेरा द्वारा,
 वसदा रहे तेरा मेहखाना, बनी रहे तेरी हस्ती।

सदके तेरं मेहखाने तो रज—रज आज पिला दे,
 पीके मैं सुध—बुध भुल जावां, ऐसी चढ जाए मस्ती।



पूरा ध्यान लगा गुरुवर दौडे—दौडे आएंगे
तुम्हें गले से लगाएंगे,
मन की आँखें खोल, तुमको दर्शन वो कराएंगे
तुम्हें गले से लगाएंगे।

है राम रमैया वो, है कृष्ण कन्हैया वो
वो ही तो ईश्वर हैं
सत् की राह पर चलना सिखा दे जो
वो ही तो ईश्वर है,
प्रेम से पुकार—२ तेरे पास चले आयेंगे

कृष्ण की छाया में, बिठाएंगे तुमको,
जहां तुम जाओगे,
उनकी दया दृष्टि जब तब पडे तुम पर,
भव से तर जाओगे,
ऐसा हैं विश्वास—२ मन में ज्योत वो जलाएंगे

त्रैषियों, मुनियों ने, गुरुओं की महिमा का
किया गुणगान है,
गुरुवर के चरणों में, झुके जो सृष्टि है
वो ही तो भगवान है,
महिमा है अपार—२ वेडा पार वा लगाएंगे



प्रीत की लत मोहे ऐसी लागी,
हो गई मैं मतवारी,
बल बल जाऊं अपने पिया को,
के मैं जाऊं वारी वारी,
मोहे सुध बुध ना रही तन मन की
ये तो जाने दुनिया सारी,
वेवस और लाचार फिरू मैं
हारी मैं दिल हारी

तेरे नाम से जी लृं
तेरे नाम से मर जाऊं—२
तेरी जान के सदके मैं,
कुछ ऐसा कर जाऊं
तूने क्या कर डाला, मर गई मैं
मिट गई मैं
हो री हा री हो गई मैं
तेरी दिवानी दीवानी

इश्क जनू जब हद से बढ जाए
हंसते हंसते आशिक सूली चढ जाये
इश्क का जाढ़ सर चढ़कर बोले
खूब लगाओ पहरे रस्ते रव खोले
यही इश्क की मर्जी है,
यही रव की मर्जी है,

तेरा बिन जीना कैसा
हां यही खुदगर्जी है।
तूने

एक मैं रंग रंगीली दीवानी
एक मैं अलबेली मैं मस्तानी,
गाऊं बजाऊं सबको रिङ्गाऊं
हां मैं दीन धर्म से अंजानी



पीता भी रहूँ और प्यास भी हो
कुछ ऐसी हगारी किस्मत हो....

परदे में छिपा हो लाख मगर
जलवा भी दिखाई देता रहे
इस आंख मिचौली खेल में
कुछ दूर भी हो कुछ पास भी हो
कुछ इश्क खुदा में चुप भी रहूँ
कुछ इश्क खुदा में बात भी हो
धरती तो वसे आंखों में
प्यारा ये खुला आकाश भी हो। पीता

मस्ती में महकता दिल भी रहे
और होश भरा उल्लास भी हो
मिट जाए मेरी हस्ती के निशा
मौजूद भी लेकिन पूरा रहूँ
ये घर ही मंदिर बन जाये
संसार भी हो संयास भी हो। पीता

जीवन का सफर यूँही बीते आगर,
कुछ धृप भी हो कुछ छांव भी हो,
मिलता तो रहे चलने का मजा
मंजिल का सदा एहसास भी हो
हो चुपी मगर गाती सी हो
संगीत हो मौन में झूवा हुआ
रोदन भी जले कुछ मुस्कराता
कुछ अश्रनृ बहाता हास भी हो, पीता

सन्नाटा कभी तृफान सा हो
चुपचाप से गुजरे आंधी कभी,
मझदार भी हो साहिल जैसा,
जो डूब सके वो पार भी हो, पीता.....

अतीत से होकर शून्य जहाँ
संकल्प सहित हम चलते चले
लेकिन जब मंजिल मिल जाए
प्रभु कृपा हुई एहसास भी हो



पहचान सके तो पहचान,
कण कण में छिपा है भगवान्

सूरज में रोशनी, चंदा में चादनी
तारों में झिलमिल छाया
पर्वत पहाड़ और नदी ये झारने
सबमें उसी की माया
मिला सुष्टि का यह वरदान, कण—कण.....

अदभूत जगत की लीला देखकर
होता नहीं विश्वास
विन आधार के धरती खड़ी है
खंभ बिना आकाश
कैसी लीला प्रभु की है महान्, कण—कण.....

जना से पहले जीव—मात्र का
तृ ही पालनहारा
हाड़ मास और रुधिर के अंदर
शुद्ध दूध की घारा
डाली माटी के पुतले में जान, कण—कण.....



प्रेम सुधा बरसा रहा
अमृत वाणी दे रहा
मन की आंखे खोल, सतगुरु वचन अनमोल

तन से हो सेवा सबकी
दिल में प्रेम प्यार हो
यही है सदेशा गुरु का
निष्कामी हो, उद्धार हो,
सतसंग में नित्य आएजा
सत सत वचन उठाए जा
मस्त करे दिन—रैन और कहीं न सुख चैन
मन की आंखे

हस्ती एक साँई की है
तेरी है न मेरी है
उसकी रजा में राजी
फिर नहीं फकीरी है
जागे तो सब अपना है
नहीं तो झूटा सपना है
वृथा रहा क्यों डोल, हर पल है अनमोल
मन की आंखे खोल, सतगुरु वचन अनमोल

सबके ही दिल में रहता
हाजरा हजूर है
सच्ची लगन हो दिल में
देता भरपूर है
कण—कण में वो रम रहा,
झोली भर—भर दे रहा,
कोई न खाली जाए, सच्चा है दरबार,
मन की आंखे खोल, सतगुरु वचन अनमोल



प्रभु के दर पे आना चाहता हूं
लौट के फिर ना जाना चाहता हूं
मुझे इक वृद्ध अमृत की पिला दो
मैं सब कुछ भूल जाना चाहता हूं, प्रभु

तेरी ही याद गें मेरा जीवन बीते
तेरे ही प्यार में मेरे आंसू निकले
मैं सिर्फ तुझको रिश्वाना चाहता हूं, प्रभु

बंदा सच्चा मैं आशिक तेरे दर का
करूं सजदा हमेशा तेरे दर का
मैं तन मन धन लुटाना चाहता हूं, प्रभु

लग्न गुरुबर मुझे ऐसी लगा दो
प्रभु के चरणों में मुझको बिठा दो
मैं धर वापिस न जाना चाहता हूं, प्रभु

करो अज्ञानता को दूर दिल से
जला दूं ज्योति ज्ञान की हृदय में
मैं सीधे पथ पे चलना चाहता हूं, प्रभु



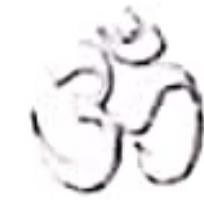
प्रेम जब अनंत हो गया,
रोम—रोम संत हो गया—२
देवालय बन गया बदन
संत तो महत हो गया, प्रेम.....

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पर पंडित भया न कोय
द्वाई अक्षर प्रेम का, पढ़े से पंडित होए।
प्रेम.....

कागा सब तन खाइयो, मेरा चुन—चुन खाइयो मास
दो नैना मत खाइयो, इन्हें पिया मिलन की आस।
प्रेम.....

लाली मेरे लाल की, जिथ देखूं तिथ लाल
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।
प्रेम.....

हस—हस कुंत न पाया, जिन पाया तिन रोय
हंसी खेडे पिया मिले, तो कौन सुहागन होए।
प्रेम.....



प्रेम हमारी साधना है, प्रेम हमारा पंथ है,
जो भरा हो प्रेम से, वो ही सच्चा संत है।

प्रेम मंदिर, प्रेम मूरत, प्रेम ही भगवान है
प्रेम ही के थाल में, सब पूजा का सामान है
प्रेम दीपक, प्रेम बाती, प्रेम पावन मंत्र है
जो भरा हो प्रेम

वेद हो या वीर वाणी, रामायण हो या गीता हो,
वो न समझेगा इसे, जो प्रेम से अंजान हो
प्रेम का जो पाठ पढ़ाये, वो ही सच्चा ग्रन्थ है।
जो भरा हो प्रेम

प्रेम के बल पे टिके, यह धरती आसमान है
ढाई अक्षर सीखा जिसने, उसका रूप महान है
प्रेम की महिमा सनातन, आदि है न अंत है
जो भरा हो प्रेम



पूर्ण मांहि रहना साधो, पूर्ण मांहि रहना,
यही गुरु का कहना रे साधो, यही.....

- १ पूर्ण ज्ञान स्वयं प्रकाशी,
काटे नाम रूप की फांसी,
सहज समाधी धरना रे साधो, यही.....
- २ पूर्ण में परिछंता भागे ना,
कुछ ग्रहण ना कुछ त्यागे,
नहीं करना, नहीं भरना रे साधो, यही.....
- ३ पूर्ण में नहीं लोक पाल है,
पूर्ण में नहीं जगत जाल है,
नहीं डूबना, नहीं तरना है साधो, यही.....
- ४ पूर्ण परमानन्द को पाया,
आदि अंत का भेद मिटाया,
नहीं जाप, नहीं जपना रे साधो, यही.....



बार बार बोलो ओम, हर पल बोलो ओम,
ओम ही ओम है, शांति का सार, बार—२

जीवन है कुछ पल का, वृथा यूं न गवां,
श्वासों की ये लड़िया, प्रेम के दीप जला,
ऐसी हो मेरी उसको पुकार, बार—२

भूल हुई जो तुझसे, सपना सा उसको जान,
मान न मान ओ प्राणी, तू तो है भगवान्,
ऐसा है मेरे गुरु का ज्ञान, बार—२

सतगुरु चरणों में आके, अपना शीष झुका,
तेरे अंदर ज्योति, उसको तू आज जगा,
फिर तू बनेगा, शाहों का शाह, बार—२

साफ कर दिल का दर्पण, फिर होगा दीदार,
ज्योत जगेगी अपरमपार, बार—२

ऐसी हो मेरी उसको पुकार, बार—२

ऐसा है मेरे गुरु का ज्ञान, बार—२

फिर तू बनेगा, शाहों का शाह, बार—२



बुएं बारियां ते नाले कंधा टपके,
आवांगी हवा बनके, बुए बारियां होए

वाजी इश्क दी जीत लवांगी मैं हंसके
रब तो दुआ बनके, बुए बारियां

दिल दियां राहां उते पैर नहींयो लंगदे
मुकदरां दे लेखे कटी मिट नहीं सकदे
मैनूं रब ने, हाँ मैनूं रब ने बनाया तेरे लई
मत्यं तेरा नाम लिख के, बुए बारियां

चल चड़या ते सारे लौकी पये तकदे
झूंगे पानियां च, फेर दीवे पये जलदे
कण्डे लग जावांगी, कच्चा कडा बनके
मैं आवांगी हवा बनके



वृज के नंद लाला, राधाजी के सांवरिया
सब दुख दुर हुए, जब तेरा नाम लिया

मीरा पुकारे प्रभु गिरधर गोपाला
ढल गया अमृत में विष का भरा प्याला
कौन मिटाए उसको, जिसे बचाए नंदलाला
सब दुख

जब तेरे गोकुल पर आया दुख भारी
इक इशारे से सब विपदा टारी
मुड गया गोवर्धन, जहां तूने मोड दिया
सब दुख

नैनों में श्याम वसे, मन में बनवारी
सुध विसराए गई, मुरली की धुन प्यारी
मन के मधुवन मे गस रचाए रसिया
सब दुख

वृज के नंदलाला



बार बार बोलो ओम, हर पल बोलो ओम,
ओम ही ओम है, शांति का सार, बार-२

भूल हुई जो तुझसे, सपना सा उसको जान,
गान न मान ओ प्राणी, तू तो है भगवान,
ऐसा है मेरे गुरु का ज्ञान, बार-२

जीवन है कुछ पल का, वृथा यूं न गवा,
श्वासों की चे लड़िया, प्रेम के दीप जला,
ऐसी हो गेरी उसको पुकार, बार-२

सतगुरु चरणों में आके, अपना शीष झुका,
तेरे अंदर ज्योति, उसको तू आज जगा,
फिर तू बनेगा, शाहों का शाह, बार-२

साफ कर दिल का दर्पण, फिर होगा दीदार,
ज्योत जगेगी अपरमपार, बार-२

फिर तू बनेगा, शाहों का शाह, बार-२



मेरे सतगुरु ने मुझे राजा बना दिया
खोला जो खजाना ज्ञान का, महाराजा बना दिया।

ज्ञान की वाणी चुन चुन के, सतगुरु ने माला बनाई,
आत्मदोर बुन—बुन के जिज्ञासु को पहनाई

पांचों विकारों की सतगुरु ने हमको युक्ति बताई
द्वेष का काजल पौछकर फिर आत्मदृष्टि दिखाई
माया

सारा जहाँ यह अपना है हीरे—मोती क्या करने
अज्ञानी थे हम अब तक जीते—मरते माया में,
मौत हुई अज्ञान की ज्ञानी बना दिया।

होगी कृपा सतगुरु की हम आत्मरस में रहलेंगे
जब तक प्राण तन में रहेंगे हंस हंस के सहलेंगे
बालक है भगवान के, भगवान से मिला दिया।



मैं ओम में ऐसे रम जाऊँ, ऐसी निर्मल बुद्धि कर दो

ये चंचल मन संकल्पों का, इक जाल विछाए रहता है
है सतचित आनंद रूप प्रभु, मेरे चित को चेतन कर दो।

मन चिंता करता रात दिवस, विषयों में आनंद पाने की
इक झाँकी अपनी दिखा के प्रभु, मेरे मन को सोडम कर दो।

दोष न देखूं आंखों से, न सुनु बुराई कानों से
सारा जग आत्म रूप लगे, ऐसी मेरी दृष्टि कर दो।

मुख से गुणगान करूँ तेरा, सदा मीठे वचन उचारा करूँ
अमृत की धार पिला कर के, इस वाणी में अमृत भर दो।

ये अंग प्रतिअंग जो हैं मेरे, लग जाए सेवा में तेरे
जीवन अर्पण हो चरणों में, हे नाथ कृपा ऐसी कर दो।



मना सावरे नू किस तरह पाइदा
पहले अपना आप गवाइदा

फूल कैहदा मैनू माली ने तोड़या
सुई धागे विच पाके पिरोलिया
मैं फिर भी मुहं नहीं बोल्या
हार बनके ते श्याम अगे जाइदा
मैनू सावरे ने गले विच पा लिया
मैनू सावरे ने हां नाल ला लिया। मना

दूध कैहदा मैनू ग्वाले ने चो लिया
चाटी विच पा के विलो लिया
मैं फिर भी मुहं नहीं बोल्या
मक्खन बनके ते श्याम अगे जाइदा
मैनू सावरे ने भोग लगा लिया
मैनू सावरे ने प्यार नाल खा लिया। मना

बांस कैहदा मैनू जंगल विच पुट्या
छेद करके ते खाली कर सुट्या
मैं फिर भी मुहं नहीं बोल्या
बंसरी बनके ते श्याम अगे जाइदा
मैनू सांवरे ने होठों नाल ला लिया
मैनू सावरे ने प्यार नाल बजा लिया। मना

सोना कहदा मैनू भटठी विच सुट्या
मार मार के हथोडे नाल कुट्या
मैं फिर भी गुहं नहीं बोल्या
मुकुट बनके ते श्याम अगे जाइदा
मैनू सावरे ने सिर ते सजा लिया
मैनू सिर दा ताज बना लिया। मना



मैं तो आई फकत मेरे दीदार को,
क्या खबर थी कि आते ही लुट जाऊंगी,
फूल लाई थी मैं पेश करने को,
क्या खबर थी कि दिल अपना दे जाऊंगी।

उनकी महफिल की रौनक कहूं क्या जी
सारी जन्नत नाचा करती है
घूट मैंने अभी एक दो थे पीये
क्या खबर थी कि पीते ही बहक जाऊंगी।

उनकी नजरों में ऐसा जादू भरा,
देखती ही रह गई एक बुत की तरह,
मैं तो आई थी इक दो लम्हे के लिए
क्या खबर थी कि हमेशा को बंध जाऊंगी।

उनका महखाना चलता ही रहता सदा,
पीते रहते हैं हरदम प्याला नया,
चैन पाने को आयी थी खोया हुआ,
क्या खबर थी कि ज्यादा तडप जाऊंगी।



मेरी जिंदगी में क्या था, तेरी कृपा से पहले
मैं बुझा हुआ दीया था, तेरी कृपा से पहले

मैं था खाक एक जर्जा, और क्या थी मेरी हस्ती
यूँ धपेड़े खा रहा था, तूफां में जैसी कश्ती
दर बदर भटक रहा था, तेरी कृपा से पहले

मैं था इस कदर जहां में, जैसे खाली सीप होती,
मेरी बढ़ गई है कीमत, तूने भर दीये हैं मोती
मुझे कौन पूछता था, तेरी कृपा से पहले

यूँ तो है जहां में लाखों, तेरे जैसा कौन होगा,
तेरे जैसा वंदा परवर, गला ऐसा कौन होगा,
मेरा कौन आसरा था, तेरी कृपा से पहले



मेहरां बाल्या साँईया रखि चरणा दे कोल
ओगन हार दी बेनती, तुम सुनो गरीब नवाज
जे मैं पूत कपूत, हां तो बौहड़ पिता नृ लाज
ओ मेहरां

मेरी करियाद तेरे दर आगे होर सुनावां केनू
खोल ना दफ्तर ऐवा वाले, दर तो धक न मैनू
ओ मेहरां

तेरे जाया मैनू होर न कोई, मेरे जये लख तेनू
जे मेरे विच एंब ना होदा, तु बकरोंदा केनू
ओ मेहरां

जे ते सागर नीर भरया, ते ते ओगुण हमारे
दया करो कुछ मेहर उपाओ, डुबदे पत्थर तारे
ओ मेहरां

ओखे वेले कोई न पूछे, बाबुल बीर ते मावां
सदे धक्का देवदे, मेरी कोई न पकडे बावां
ओ मेहरां

एक ऐ मेरा बाबुल देखे, देदां देश निकाला
लख ऐ मेरा सतगुर देखे, वेख के करदा टाला
ओ मेहरां



महफिल रुहां दी मेरे सतगुरु लाई ए
जेडा आ जांदा ओनू मस्ती छाई है

आओ संइयो जी धुट पीके बेखो जी
पहले पीके ते फिर जीके बेखो जी
जेडा पी लेंदा ओने होश गवाई ए
जेडा आ बड़या ओनू मस्ती छाई है। महफिल

लोहा पारस बन सोना बन जांदा है
मेरा सतगुरु अपने जया बनांदा है
युक्ति दे नाल सतगुरु घुट पिलाई है
जेडा आ बड़या ओनू मस्ती छाई है। महफिल

जेडा पी लेंदा ओटी दशा अनोखी है
लेकिन संइयो जी ए पीनी ओखी है
जेडा पी लेंदा ओने मुक्ति पाई है
जेडा आबड़या ओनू मस्ती छाई है। महफिल

सतगुरु मर्म न जेडे भर भर दें दे ने
दुनिया मतलब दी कोई विरले लेंदे ने
आशिक प्रेमी ने इक डिग लगाई है
जेडा आबड़या ओनू मस्ती छाई है। महफिल



मेरा जीवन तेरी शरण—२
सारे राग, विराग हुए अब—२
मोह सारे, त्याग हुए अब—२
एक यही मेरा वंदन, मेरा जीवन—२

अविरत रहा भटकता अब तक
भटकू और अकेला कब तक
पालूं केवल तुझाको ही माँ
एक यही है मेरी लग्न। मेरा

तेरे चरणों पर हो अर्पण
मेरे जीवन के गुण अवगुण
सारी व्यथाएं दूर करो माँ
हो कुसुमित मेरा नंदन। मेरा



मुझे रास आ गया है तेरे दर पे आना जाना
तुझे मिल गई पुजारिन, मुझे मिल गया ठिकाना।

मेरे दिल की ये जो महफिल, तेरे दम से सज रही है
आ जाओं श्याम प्यारे, करके कोई वहाना,
आ बैठो श्याम प्यारे, करके कोई वहाना। मुझे

तेरी सांवरी सी सूरत, मेरे मन गें बस गई है
ओ प्यार तेरी सूरत, मेरे मन में बस गई है
ओ सांवरे सलैने, अब और न सताना। मुझे

दुनिया का गम नहीं है, चाहे रुठ दुनिया जाये
मेरी जिंदगी के गालिक, कहीं तुम न रुठ जाना। मुझे

तेरी बंदगी से पहले, मुझे कौन जानता था
सर अब तो झुक गया है, आता नहीं उठाना। मुझे

मेरी आरजू यही है, दम निकले तेरे दर पे
अभी सांसे चल रही है, कहीं तुम चले न जाना। मुझे



मैनू ता सतगुरू तेरी याद सतावे
सारी सारी रात मैनू नींद न आवे
मेरे तो बस बिच नई सतगुरू प्यारया.....

नाम तेरे दा मैं बन लया गाणा
लौकी तां मैनू मारन ताना
लौका दी मैं न सुनी। सतगुरू प्यारया.....
नाम तेरे दी मैं लालई मेहदी
लौकी तां मैनू पागल केहदी
मैं ता पागल सही, सतगुरू प्यारया.....

नाम तेरे दा मैं पा लया चूढ़ा
तेरा ते मेरा सतगुरू प्यार है गृद्धा
प्यार ये कटना नहीं। सतगुरू प्यारया.....
नाम तेरे दी मैं पा लई माला
सतगुरू मेरा सारे जग तो निराला
किसी नू दसना नहीं। सतगुरू प्यारया.....
नाम तेरे दी मैं ले लई लावां
छड के दस तेनू किधर जावां
तेनू मैं छडना नहीं। सतगुरू प्यारया.....

नाम तेरे दी मैं वै गई डोली
सारी संगत जय जय बोली
वापस जाना नहीं सतगुरू प्यारया.....



मैं अकेली ही चली थी राहों में
कारवां न जाने कहां से बन गया।

सूर्य में सौन्दर्य उसकी रोशनी
चांद में प्रतिबिम्ब उसकी चांदनी
दो करिश्मों की सुनहरी बांहों में
आसमा जाने कहां से बन गया। मैं.....

सहज को अपना बनाना था मुझे
सत्य को अपना बनाना था मुझे
चार ही तिनके बटोरे खेल में
आशियां जाने कहां से बन गया। मैं.....

बदलियां रोती रही हैं संग मेरे
बिजलियां हँसती रही हैं संग मेरे
गीत का हर बोल बन कर मरसिहा
दास्तां जाने कहां से बन गया। मैं.....



मेरे साकिया बता दे, वो शराब कौन सी है
जिसे पीके सारी दुनिया, तेरे दर पे झूमती है।

फैलेगा मेरा दामन, सौ बार तेरे आगे
पहले सफा बना दे, तेरे दर पे क्या कमी है
मेरे साकिया.....

तू हजार बार ढुकरा, मेरा सर यहाँ झुकेगा,
है यही मेरी इबादत, मेरी जिंदगी यही है
मेरे साकिया.....

तौवाह गुनाह मेरे, क्या क्या किया है मैंने
इस पर भी तू निवाजे, तेरी बंदा परवरी है
मेरे साकिया.....



माही मैं तो गोविद के रंग राची

पचरंगी चौला पहन सखी, डिरभिट खेलन जाती
वहां डिरभिट मेरे मिलो सांकरो, खोल मिले पन दासी
माही मैं तो

जिनके पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजे पाती
मेरे पिया मेरे हृदय बसत है, ना कहु आती न जाती
माही मैं तो

प्रेम हटी का तेल मंगाया, मन सागर लिए बाती
सूरत निरत का दिवडा जोया, जगा रही दिन राती
माही मैं तो

चंदा भी जायेगा, सूरज भी जायेगा
जायेगा धरती आकाशी
पवन और पानी दोनों ही जायेंगे, अटल रहे अविनाशी।
माही मैं तो

सतगुरु मिलया संशय छूटा, घट पाया प्रकाशी
मोह—गाया दोनों ही झुठे, गाये मीरा दासी
माही मैं तो



मेरा सतगुरु दीनानाथ है, मेरे सिर उते उसका हाथ है—२

कागा नैन निकाल के, ले चल गुरु के पास
पहले दर्श कराई के, फिर लीजो तो खाए।
मेरा सतगुरु

मेरी सी कोई नेक कमाई
जेडी ऐथे ले आई
अपने सारे छड़ गए, सतगुरु अपनी बांह फडाई।
मेरा सतगुरु

सतगुरु मेरया यज्ञ रचाया
इक आवे, इक जावे
मेरा सतगुरु



मेरा दिल तो दीवाना हो गया, मुरली वाले तेरा
 ओ मुरली वाले तेरा, बंसी वाले तेरा
 नजरों का निशाना हो गया, मुरली वाले तेरा

दीवांगी ने क्या क्या सिखाया
 दुनिया छुड़ा के तुमसे मिलाया
 तेरा नजरे मिलाना गजब हो गया, मुरली वाले तेरा

मेरे दिल मेरे ठिकाना हो गया

जब से नजर से नजर मिल गई है
 उजडे चमन की कली खिल गई है
 दीवाना जमाना हो गया, मुरली वाले तेरा

मेरा नजरे मिलाना हो गया,

प्राणनन के प्यारे कहां छुप गये थे
 नैनन के तारे कहां छुप गये थे
 अब तो सारा जमाना हो गया, मुरली वाले तेरा

तू मेरा प्यारा प्यारा, मैं तेरा पागल
 तिरछी नजर से है, दिल मेरा धायल
 दीवाना जमाना हो गया, मुरली वाले तेरा



मुझे मेरी मस्ती कहां लेके आई
 जहां मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है
 लगा जब पता मुझको हस्ती का मेरी
 बिना मेरे अपने, जहां कुछ नहीं है।

सभी में सभी से, परे मैं ही मैं हूं
 सिवाए मेरे अपने, कहां कुछ नहीं है
 न दुख है न रुख है नहीं शौक मुझको
 अजब है ये मस्ती, पिया कुछ नहीं है।

ये सागर ये लहरे, ये झाग और बुदबुद
 कल्पित है जल के सिवा कुछ नहीं है
 अरे मैं हूं आनन्द, ये आनन्द है मेरा
 है मस्ती ही मस्ती, पिया कुछ नहीं है।

भरम ये द्रन्द का जो मुझमें पड़ा था
 मिटाया जो मैंने खफा कुछ नहीं है
 ये पर्दा दुई का हटाकर जो देखा
 सभी एक मैं हूं, जुदा कुछ नहीं है।



मैं बलिहारी सतगुरु मेरे,
सतगुरु आए साडे वेडे.....

जिन्हा राहां ते गुरुजी आए ने
ओन्हां राहां ते पूळ बरसावा
ओन्हां राहां ते खुद विछ जावा
बडे दयालु सतगुरु मेरे, सतगुरु

मेरे सतगुरुनां दा रूप निराला
दर्शन करदां ए करमा वाला
बडे प्यारे सतगुरु मेरे, सतगुरु

सतगुरु नाम दा दान देके तारदे
भव सागर तो पार उतार दे
पार लगादे सतगुरु मेरे, सतगुरु

जेडे हर वेले नाम नेरा जपदें
दुख ओगा दे नेडे नहीं लगदे
कष्ट मिटादें सतगुरु मेरे, सतगुरु



मेरी रसना से प्रभु तेरा नाम निकले
हर घडी हर वेले, ओम-२ निकले

मन मंदिर में ज्योति जगाऊंगी
प्रभु तेरे मैं सदा गुण गाऊंगी
मेरे रोम-२ विच तेरा नाम निकले.....

मेरे अवगुण चिन्त से भुला देना
मेरी नैया पार लगा देना
तेरी याद विच सुबह और शाम निकले.....

तेरी महिमा का सदा गुणगान करूँ
तेरे वचनों का नित मैं ध्यान करूँ
तेरी याद विच जीवन तमाम निकले.....



मैनू लादो शामजी, अपने नाम वाली मेंहदी—२
 नाम वाली मेंहदी
 मैनू लादो श्याम जी

ऐ मेंहदी दी चमक अनोखी
 ऐ न मिलदी सबनू सोखी
 लगन लगानी पैंदी, अपने नाम

ऐ मेंहदी ना मिलदी बजारा
 ना मिलदी ऐ लखां हजारां
 जान गवानी पैंदी, अपने नाम

ऐ मेंहदी सारी संगत नू ला दो
 जन्म—२ दी प्यास बुझा दो
 जन्मां तक जो रहन्दी, अपने नाम

ऐसी मेंहदी लगा दो सांवरिया
 जो ना उतरे सारी उमरिया
 ऐहयो गोपी कैंदी, अपने नाम



मैं तो श्याम संग नेहा लगायो रे
 कान्धे पे ओडे काली कमरिया
 सावरी सुरनियां मोहनी मुरलिया
 मैं तो हृदय बीच समायो रे, मैं तो श्याम संग.....
 मैं तो श्याम संग अखियां मिलायो रे.....

अब तो भयी मैं अपने श्याम की
 और शाम भये प्रभु मोर
 मैं तो लाज का पर्दा हटायो रे
 मैं तो श्याम संग

लोग कहे मीरा गई रे बावरी
 मैं तो अविनाशी वर पायो रे
 मैं तो श्याम संग